अध्याय-एक

प्रस्तावना-

प्राचीन काल में शिक्षा सबको ग्रहण करने का अधिकार शूद्रों को नहीं था। उस समय हमारे देश की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थीं, वैदिक काल में शूद्र शब्द की उतप्ति हुई तब भारत चार वर्ण व्यवस्था में विभक्त हो चुका था। मौर्य काल में मनु के द्वारा जाती को चार वर्णो में विभक्त करके कानून बनाया गया इसे शक्ति के साथ पालन किया जाता था, शूद्रों तथा वैश्यो को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार नहीं था। रामायण काल में शंबूक ऋषि ने हिमालय पर तपश्या करके शूद्रों को शिक्षित करने का प्रयास किया, तभी एक ब्राह्मण का पुत्र अपने मृत्यु से मरने के कारण उस ब्राह्मण ने उसका आरोप शंभूक ऋषि पर किया। उस समय राम ने उसकी गर्दन काट दी था। इसी तरह महाभारत काल में पांडवो के गुरु द्रोणाचार्य ने गुरुकुल में पांडवो और कौरवों को शिक्षा दे रहे थे, उसी समय एक भील जाति का लड़का एकलव्य द्रोणाचार्य के पास धनुष विद्या सीखने गया था।

द्रोणाचर्या ने उसे भील जाति का होने के कारण उसे धनुष विद्या की शिक्षा नहीं दी। वह लड़का द्रोणाचार्य का प्रतिमा बनाकर लगन और एकाग्रता से अभ्यास करने लगा, धनुष विद्या में निपुर्ण होने पर द्रोणाचर्या ने उससे दान में दाहिने हाथ का अंगूठा ले लिया। इस तरह के बर्ताव उस समय दलितो और शूद्रों पर किए जाते थे, जिससे ब्राह्मणों के घृणित कार्यों पर पर्दा पड़ता रहे और उनका वर्चस्व कायम रहे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में शाक्य कुल में जन्मे गौतम बुद्ध ने अपने तपश्या और ज्ञान के बल बुद्द ने पर दलितो और शूद्रों को घूम-घूम कर शिक्षित किया। भक्ति काल के आते- आते संतों ने दलित और शूद्रों को शिक्षित करने का प्रयास किया जैसे-दादू दायत, रैदास, कबीरदास, गुरुनानक तथा तुकाराम आदि संतो ने सत्संगके माध्यम से हिन्दू रुढ़ीवादिता का विरोध किया, दादू दयाल एक संत थे जिन्होंने मराठी में अपना उपदेश दिया।

निर्गुण उपासक संत कवि दादू दयाल हिन्दू और इस्लाम देश की महान संस्कृतियो के आरभिक संघर्ष एवं संपर्क के बाद समन्व की नई दिशामें बड़ा योगदान दिया। इसी तरह रैदास का निर्गुण काव्य शाखा में प्रमुख स्थान था। रैदास के काव्य में वर्ण व्यस्था से उत्पन्न भेदभाव

कर्मकांड के प्रति गहरा क्षोभ अभिव्यक्त हुआ। इसी तरह रैदास जी वर्ण व्यसथा पर गहरा प्रहार किया। इसके बाद सत्संगो के माध्यम से लोगो तक अपनी बात पहुँचाई तथा शिक्षित करने का प्रयास किया। रैदास जाति के चर्मकार थे और ये मोची का कार्य करना इंनका मुख्य पेशा था, इनकी शिष्या में मीराबाई हो गयी। इसी प्रकार कबीरदास हिन्दुओं मुस्लिमों को ललकारा तथा एकजुट होकर जाति प्रथा का विरोध किया।

कबीरदास जी अपने दोहों के माध्यम से लोगो को शिक्षित करने का प्रयास किया तथा वर्ण व्यवस्था के विरोध किया। लोगो सत्संग के माध्यम से शिक्षित करने का प्रयास किया। इसी प्रकार गुरुनानक ने सत्संग करके भक्तिकाल में दू -दू तक भ्रमण कर जनता को जागरूक तथा शिक्षित करने का प्रयास किया। दलित तथा शूद्र की आर्थिक सामाजिक दशा की दैयनिक स्थिति में सुधार करने का प्रयास किया। लोगो को शिक्षित करने में अपनी जीवन लीला समाप्त दी। तुकाराम भक्तिकाल में मराठी संतो में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। तुकाराम ने अपने काव्य में सामाजिक वैशन्य कर्मकांड तथा सब तरह की रुढ़ियो पर गहरी चोट की हैं।

उन्होने संत ज्ञानेश्वर की सशक्त भक्ति परंपरा को आगे बढ़ाया तथा अपने आराध्या को विठ्ठल, हरी, राम, नामो से संबोधित करते हैं। आचरण की शुद्धता नाम स्मरण आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण उनकी भक्ति की मुख्य विशेषताए हैं। गहरी समाजिक चेतना से सम्पन्न तुकाराम का काव्य कबीर स्मरण करता हैं। इस तरह भक्ति काल शूद्रों एवं दलितो का विकास हुआ, आधुनिक काल में लार्ड मैकाल ने 1835 ई. में दलितो और शूद्रों को शिक्षित करने के लिए अँग्रेजी शिक्षा का अवसर दिया था। कार्यकारिणी परिषद का सदस्य होने के कारण अधिकार से 2 फरवरी 1835 में लार्ड मैकाले में अपने महत्वपूर्ण पत्र में लिखा और उसे परिषद के सामने रखा मैकले ने आग्ल दल का स्पष्ट समर्थन किया।

उसे भारतीय रीति रिवाजो के लिए अपना तिरस्कार इन शब्दो में व्यक्त किया। यूरोप एक के एक अच्छे पुस्तकालय की एक अलमारी, अँग्रेजी भाषा के उपयोग और उसके महत्वपूर्ण दावे के विषय में उसने कहा "जो कोई यह भाषा जानता हैं उसको उस महान वैदिक ज्ञान जिसे संसार में बुद्धिमान राष्ट्रो ने उत्पन्न किया। गत 90 पीढ़ियो से हस्तांतरित किया हैं उसको सुगमता से उपलब्ध करने की शक्ति पहले ही प्राप्त हैं। भारत में यह भाषा शासक वर्ग की भाषा हैं। स्थानीय लोग भी सरकारी कार्यलयों में इसका प्रयोग करते हैं और यह पूर्वी समुद्रो में व्यापक की

भाषा बनाने वाली हैं" में काले ने यूरोप के पुनर्जागरण का उल्लेख भी किया हैं। संभवत: वह पुरुषो की ऐसी श्रेणी उत्पन्न करना चाहता था ।

जो रक्त और रंग से भारतीय हो, परंतु अपनी प्रवृत्ति, विचार, नैतिक मापदंड और प्रज्ञा से अँग्रेज हो अथार्थ वह ब्राउन रंग के अंग्रेज़ बनाना चाहता था। जो कंपनी के कार्य को संभाल सके। आधुनिक काल में लार्ड मैकाले के बाद ज्योतिबाराव फुले ने दलितो को शिक्षित करने का प्रयास किया। सर्वप्रथम अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को शिक्षित किया तथा उनकी पत्नी उनकी पहली शिक्षिका थी। इनके लिए उन्होने पुणे में एक स्कूल खुलवाया, जिसके माध्यम से शिक्षिण कार्य को गति दे सके। दलितो को शिक्षित करने में उनका बहुत ही अहम स्थान रहा हैं, शिक्षा देने के कारण उनके पिता उनको घर से निकाल दिये, तभी से वे सावित्रीबाईफुले को साथ लेकर बाहर रहने लगे, ज्योतिराव फुले दलितो की शिक्षा के लिए अथक प्रयास किया था ।

आरक्षण के जन्मदाता छत्रपति साहू इसको बाद आरंक्षण देकर आगे बड़ाया। इस गति को आगे बढ़ाने में महाराज जी अहम भूमिका सामने आती हैं, छत्रपति साहूजी ने दलितो को शिक्षित करने का प्रयास किया था। आरक्षण देकर दलित और शूद्रों को ऊपर उठने का मौका दिया था। आधुनिक काल में जन्मे डॉ.बाबा साहब भीमराव रामजी अंबेडकर ने संवैधानिक रूप से उन्हे ऊपर उठाने का मौका दिया तथा भारत का सविंधान लिखकर भारत की जनता में से दलितो और शूद्रों को ऊपर उठाने का भरपूर प्रयास किया। इस कार्य के लिए डॉ.बाबा साहब आज के समय में ज्यादा प्रासंगिक देखने को मिलते हैं। डॉ.बाबा साहब अपने ऊपर सहे सभी कठिनाइयो को ध्यान में रखकर दलितो और शूद्रों को ऊपर उठाने का प्रयास किया था ।

इस तरह डॉ.बाबा साहब भीमराव रामजी अंबेडकर आज समाज में नहीं रहे, लेकिन समाज के हर दलित और शूद्र के दिल और दिमाग में बसे हुये हैं। डॉ. बाबा साहब समाज के विकास के लिए उन्होने अपना पूरा जीवन समाप्त कर दिया था। इस तरह प्राचीन काल से आधुनिक कल तक के समय में हम दलित एवं शूद्रों की शिक्षा की परिधि का व्याहरिक अध्ययन किया। भले हमारा देश विकास कर रहा हैंऔर विकास की ओर अग्रसर हो रहा हैं। आज दलित और शूद्रों की शैक्षणिक स्थिति में सुधार बहुत ही मामूली नजर आ रहा हैं, शूद्र और दलित आज भी पिछड़े हुये हैं। इनके इस पिछड़े पन का कारण आज समाज में विकास काफी अवरुद्ध हो रहा हैं शिक्षा के लिए सरकार पैसा पानी की तरह बहा रही हैं यह पैसा सरकार का सही दिशा में नहीं लग रहा हैं।

यदि प्राथमिक पाठशाला के बाद गाँव-गाँव में दलितों और शूद्रों के बच्चों की फ्री कास्ट कीमत पर कर दी जाय, तो कुछ लोगो को रोजगार तथा दलित और शूद्रों की शिक्षा में सुधार निश्चित रूप से संभव हो सकेगा। शिक्षा के बिना समाज और जाति का विकाश काफी अवरुद्ध होता हैंसमाज के विकाश के लिए शिक्षा बहुत ही जरूरी हैं। उत्तर प्रदेश में दलितो की स्थिति पहले से थोड़ी सुधरी नजर आती हैंसमाज के विकाश के लिए दलित और शूद्रों का विकाश करना बहुत ही जरूरी हैं, जब तक मूल मजबूत नहीं होगा तब तक उसकी शाखा भी सुदृढ़ नही होगी। इसके द्वारा मूल को विकाश करने के किए हमें शाखा को शुदृढ़ करना चाहिए। तभी सबका विकाश संभव हो सकता हैं। उत्तर प्रदेश के दलित और शूद्र राजनीतिक रूप से जागरूक हैं, लेकिन वह सामाजिक में आर्थिक रूप से बहुत ही पिछड़े हैं।

जिसका कारण उनके बच्चों की शिक्षा पर देखा जाता हैं। उत्तर प्रदेश के दलित और शूद्र अपने बच्चों की शिक्षा के लिए बहुत जागरूक नहीं होते हैं। जिसके कारण उनकी शिक्षा बाधित होती हैं। यदि उनके बच्चे जागरूक और शिक्षित होते तो समाज की गाड़ी को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती हैं। जिसके कारण समाज का विकाश अवरुद्ध हो गया हैं। जागरूक न होने के कारण वे अपने बच्चों को शिक्षित करने के बजाए इट भट्टा पर मजदुरी करने के लिए भेजते हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत न होने के कारण अपने बच्चों को कम उम्र में ही दिल्ली और बॉम्बे जैसे शहरो में भेज देते हैं। जिसके कारण उनके बच्चे की शिक्षा बाधित होती हैं। आर्थिक रूप से वह कुछ दिन के लिए सुदृढ़ नजर आते हैं। लेकिन उनके बच्चों की जिंदगी शैक्षणिक रूप से अवरुद्ध होती हैं।

गाजीपुर जनपद में दलितो की स्थिति बहुत अच्छी नहीं हैं। वे अपने बच्चों की शिक्षा के लिए जागरूक नहीं हैं। वहाँ की स्थिति ठीक न होने की कारण भी वे अपने बच्चों को प्राथमिक स्कूल में भोजन के लिए मजबूर हैं। उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हैं,लेकिन राजनीतिक स्थिति में बहुत ही जागरूकता हैं। समाज में वह जहा भी रहते हैं राजनैतिक वाली बात ही करते हैं। यदि वे अपना समय अपने बच्चों को दे तो उन बच्चों की शैक्षणिक स्थिति में काफी परवर्तन आयेगा। दलित लोगो की सामाजिक स्थिति अच्छी न होने के कारण समाज में वे बहुत जागरूक नजर नहीं आते हैं, भारतीय समाज में अपनी स्थिति को लेकर वे लोग बहुत ही चिंतित रहते हैं। जैसे की कोई समाज में उनकी कदर ही नहीं करता समाज में उनका कार्य हर जगह बाधित होता हैं।

जिसका कारण दलित होना ही हैं एक मात्र उनकी सोच में आ चुका हैं। उसे निकालना बहुत ही बड़ी चुनौती हैं, आज के समाज में दलित बहुत कम ही जागरूक तथा विकसित नजर आते हैं तथा अपनी शिक्षा के लिए जागरूक नहीं दिखाई देते हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि समाज में उनकी स्थिति अच्छी नहीं हैं, इसका एक मात्र कारण उनको दलित होना ही समझ आता हैं। गाजीपुर जनपद में कुछ ऐसे विद्यालय हैं जहाँ प्राथमिक स्कूल में अध्यापक बच्चों से पैर छुवाते हैं और अपनी आवोभगत में गुरुकुल की तरह से प्रयोग कर रहे हैं। ये कार्य सवर्ण अध्यापकों में अधिक देखने को मिलता हैं। शिक्षा के नाम पर अपनी सेवा भाव करवाया जाता हैं मरदह ब्लॉक में दलितो की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने कारण वहा के के लोग शिक्षा में बहुत जागरूक नहीं हैं। लेकिन राजनीतिक रूप से बहुत जागरूक हैंवे हमें शा अपने ही हित में राजनीतिक करते हैं।

सामाज में उनका वर्चस्य बहुत ही नगण्य देखा जाता हैं। सामाजिक स्थिति अच्छी न होने कारण समाज में उनका कार्य बाधित होता हैं, यहा पर लोगो के अपने बच्चे की शिक्षा को लेकर जागरूक नहीं हैं। जिस कारण शिक्षा बाधित होती हैं। इस तरह मरदह ब्लॉक के दलित बच्चों के माता-पिता की दैयनिक स्थिति अच्छी न होने कारण वह अपने बच्चों को प्राथमिक स्कूल में ही भेजने के लिए मजबूर हैं।

प्राथमिक स्कूल की स्थिति वर्तमान समय पर बहुत दैयनीय देखने को मिलती हैं। वहा के लोग हमेंशा अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर स्थिर देखे जाते हैं जिसका मूल कारण उनकी आर्थिक स्थिति का अच्छा न होना सामने आता हैं, सामाजिक तौर पर वे लोग हमेंशा अपने बच्चों की स्थिति को लेकर हमेंशा चिंतित रहते हैं। लेकिन उसका उपाय सही ढंग से नहीं करते हैं। और शिक्षा को लेकर चिंतित रहते हैं । यह शिक्षा बच्चों की जागरूकता में दिखयी तो देती हैं लेकिन अभिभावकों के जागरूक न होने से उनकी शिक्षा बाधित होती हैं।